हवन-प्रकरण एवं अनुष्ठान मार्गदर्शिका

दशमहाविद्याओं में जब भी किसी विद्या का अनुष्ठान करना होता है तब हवनादि कर्म भी सम्पादित किए जाते हैं। ऐसी स्थिति में श्रीविद्या षोडशी, मां काली अथवा माता बगलामुखी के हवनमन्त्रों की जानकारी हेतु कई साहित्य आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं परन्तु अन्य महाविद्याओं के लिये हवन-मन्त्रों की जानकारी आसानी से एकत्र कर पाना थोड़ा कठिन है। विस्तार भय से हमने महाविद्या-रत्नाकरः में हवन-मन्त्रों को समाहित नहीं किया है परन्तु साधकवर्ग को उचित दिग्दर्शन अवश्य प्रदान कर रहे हैं। प्रत्येक महाविद्या में लयाङ्ग पूजा-तर्पण, षडङ्गार्चन-तर्पण, गुरुमण्डलार्चन-तर्पण और आवरण-पूजा का विधान है जिसे इस ग्रन्थ में क्रम से प्रत्येक विद्या में प्रस्तुत किया गया है। इन सभी के मन्त्रों से **श्रीपादूकां पूजयामि नमः अथवा तर्पयामि नमः** के स्थान पर **स्वाहाकार** लगा देने पर सभी मन्त्र हवन-मन्त्र बनते हैं और इन मन्त्रों से आहूतियॉ दी जा सकती हैं। आहूतियॉ सदैव श्रीगणेश, श्रीगुरु एवं भैरवादि के नामों से आरम्भ करते हुए उसके पश्चात् मूलविद्या की आहूति डाली जानी चाहिए। हवन हेतु अन्य शास्त्रीय-विधानों एवं नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये। हवन में संबंधित महाविद्या शक्ति के विविध नामों, अष्टोत्तरशतनाम अथवा त्रिशती अथवा सहस्रनामों से **नमः** के स्थान पर **स्वाहा** लगाकर भी आहूतियॉ दी जा सकती हैं। पूर्णाहूति हेतु अन्त में वैदिकमन्त्र के साथ महाविद्या मूलमन्त्र बोलकर पूर्णाहूति सम्पन्न करें। हवन हेतु शेष सभी प्रक्रिया प्रचलित नियमों के अन्तर्गत ही पालन करनी चाहिए।

हवन-सामग्री विविध प्रकार की हो सकती हैं, प्रत्येक महाविद्या के लिये और कभी-कभी काम्यकर्मानुसार सामग्रियों में भिन्नता हो सकती है परन्तु हवन हेतु आधारभूत सामग्री इस प्रकार से है- चांवल, तिल, यव(जवा), पंचमेवा, गुग्गुल, धृत, भोजपत्र, चन्दन-चूरा तथा चीनी अथवा गुड़ यह सभी प्रयुक्त होते हैं। ये सामग्रियां सर्वमान्य एवं प्रधानरूप से उपयोग में लायी जाती हैं। तिल की मात्रा का आधा चांवल, चांवल का आधा जवा मिलाने का विधान है। शेष सामग्री यथानुसार व्यवस्थित कर मिलायी जा सकती हैं । समिधा हेतु आम की लकड़ी सर्वमान्य है। इसके अलावा पलाश, पीपल, बड़, गूलर की लकड़ी भी उपयुक्त मानी गई है। हवन-सामग्री में सौ प्रकार की औषधियों अथवा जो उपलब्ध हो सके, को भी मिलाने की परम्परा है , ये शतौषधी हैं - अश्मरी, सहदेवी, अपराजिता, मुण्डा, उशीर, वाला, अधःपुष्पी, शंखपुष्पी, मधुयष्टिका, कोरक, चक्रान्किता, विष्णुक्रान्ता, शिवकान्ता, मयूरशिखा, काकजंघा, भृंगराज, घृतकुमारी, कुमारी, कर्णिकार, अपामार्ग, बिल्व अथवा बेलचूरा, षण्मूला, अंबुज, उत्तरा, पुत्रजीवा, दूर्वा, कुश, साल, ताल, चक्रमर्द, सिंही, व्याघ्री, अर्क/आंक, प्लक्ष, पलाश/पलाश के फूल, पिप्पल, वट, उदुम्बर/गूलर/गूलर का बीज, तुलसी, उत्पल, शतपत्र, अतसी, सरिबा, कदम्ब, वकुल

शमी, राहिक, निर्गुण्डी, मुण्डी, काश, दण्डी, ब्राह्मी, अशोक, सूर्यभक्ता, रुद्रजटा, कदली, बीजपूरक, दमनक, मुसली, पुनर्नवा, आम्र, पाटल, श्रीपर्णी, करवीर/कनेर, चम्पक, गुडुची, देवदारू, अगर, चन्दन, कटुज, शिगरू, हरिद्रा, जटामासी, वच, कूट, तेज, दारूहल्दी, बन्धुजीव, सिन्धुवार, सटी, अश्वगन्धा, मुस्ता, कुरण्टक, पनस, जीवक, जाती, मालती, मधुक, खदिर, सप्तछन्द, शिरीष, काकमाची, शतावरी, केतकी, जम्बु, शाखा, वेतस, आमलक, सरल एवं गिरीकर्णी । उपलब्धतानुसार इन्हे हवन-सामग्री में मिलाया जा सकता है अथवा अलग-अलग प्रकार से भी उपयोग में लिया जा सकता है। विशिष्ट सामग्रियों की आवश्यकता काम्य प्रयोगों में पड़ती है । दशमहाविद्याओं में प्रयुक्त होने वाली कुछ विशिष्ट सामग्रियों का यहाँ मार्गदर्शन कराया जा रहा है, इन विशिष्ट सामग्रियों में कुछ तो विशेष सात्विक-काम्यकर्मों में भी उपयोग होता है । साधवर्ग सम्बन्धित महाविद्या के हवन में इन्हे अलग से हवन के लिए प्रयुक्त कर सकते हैं -

(1) श्रीकाली महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में खीर, घी में डुबाकर बेल-पत्र, कनेर के पुष्प, लाल कमल, नागवल्ली (पान-पत्ता) इत्यादि आते हैं।

(2) श्रीतारा महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में दूध-घी-लालकमल का मिश्रण, श्वेत कमल, नील कमल, पान का पत्ता, मधुरस के साथ पलाश का फूल, पायस, घी अथवा दूध में उबला चांवल इत्यादि आते हैं।

(3) श्रीषोडशी-महात्रिपुरसुन्दरी महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में खीर, किसमिस, अनार के दाने, गन्ना, पेठा, नारियल, गुड़, मधुरस, बेलफल, चम्पा एवं गुलाब, कर्पूर-कुंकुम-कस्तुरी का मिश्रण इत्यादि आते हैं।

(4) श्रीभुवनेश्वरी महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में मधुरस-घी-शक्कर का मिश्रण एक साथ, कमल, पलाश के फूल, पीला सरसों-तिल-घी-खीर सभी एक साथ इत्यादि आते हैं।

(5) श्रीत्रिपुरभैरवी महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में बहेड़ा या इसका फूल, पलाश के फूल, जपाकुसुम, अनार के फूल इत्यादि आते हैं।

(6) श्रीछिन्नमस्ता महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में सफेद कनेर, तिल और चांवल, महुआ का फल, मालपुआ, लालकमल, पलाश एवं बेल का फूल एक साथ, बेलफल का चूरा इत्यादि आते हैं।

(7) श्रीधूमावती महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में तिल मिश्रित घी, राई मिश्रित नमक, नीम का पत्ता, केवल दूध इत्यादि आते हैं।

(8) श्रीबगलामुखी महाविद्या - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में चम्पा, पीला कनेर, आमा हल्दी, गांठ हल्दी, मधुरस मिश्रत तिल, हल्दी-चन्दन-लाख-अगर-गुग्गुल का एक साथ मिश्रण इत्यादि आते हैं।

(9) **श्रीमातङ्गी महाविद्या** - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में मधुरस युक्त महुआ का फूल, गिलोय, बेलफूल, पलाश के पत्ते अथवा फूल, नीम एवं चांवल का मिश्रण, अष्टगन्ध इत्यादि आते हैं।

(10) **श्रीकमला महाविद्या** - इनके हवन की विशिष्ट सामग्रियों में घी मिश्रित खीर, घी मिश्रित चांवल, घी और शक्कर एक साथ, मधुरस युक्त लाल कमल इत्यादि आते हैं।

इस प्रकार से हमने विशिष्ट सामग्रियों का दिग्दर्शन मात्र करा दिया है। साधकवर्ग अपने गुरु अथवा परम्परा के विद्वानों से यथोचित विचार-विमर्श कर मार्ग निकालें। यह विदित ही है कि महाविद्याओं की पूजा हेतु दक्षिणमार्गी एवं वाममार्गी परम्परा दोनों है परन्तु हमने दक्षिणमार्गी परम्परा को प्रधानता देते हुए सात्विकमार्ग का ही अनुसरण किया है। वाममार्ग में सिद्ध एवं विश्वसनीय परम्परा का अभाव है ऐसे में साधक भटक सकते हैं अतः साधकों को सात्विकमार्ग के द्वारा अपना एवं राष्ट्र के कल्याण का मार्ग चयन करना चाहिए।

अनुष्ठान हेतु किसी वैदिकमार्गी विद्वान से वेदीयों की स्थापना-पूजन करवानी चाहिए। नवग्रहों की पूजा-हवन के लिए जिन लकड़ियों की आवश्यकता होती है उनका भी ज्ञान यहां उपलब्ध करा दिया जा रहा है। यथा **सूर्य** के लिए मदार/अर्क/आक, **चन्द्र** के लिए पलाश, **मंगल** के लिए खैर/खदिर, **बुध** के लिए अपामार्ग, **गुरु** के लिए पीपल, **शुक्र** के लिए गूलर/औदुम्बर, **शनि** के लिए शमी/खिजड़ा, **राहू** के लिए दुर्वा/ दूब और **केतु** के लिए कुशा/दर्भी उपयोग होता है। इसी प्रकार सात स्थानों की मिट्टी भी सर्वदा पवित्र मानी जाती है। ये सात स्थान हैं- हाथी के स्थान की मिट्टी, घोड़े के स्थान की मिट्टी, वल्मीक (दीमक) के स्थान की मिट्टी, राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी, नदी संगम की मिट्टी, स्वच्छ तालाब की मिट्टी एवं गोशाला की मिट्टी । जब भी कोई अनुष्ठान सम्पन्न करें तब या तो साधक स्वयं ही सभी कार्य निपुणता के साथ सम्पन्न कर ले अथवा यदि आचार्य का वरण करते हैं तब वरण हेतु मुख्यतः जो सामग्री दी जाती है वे हैं- धोती, दुपट्टा, अंगोछा, लोटा, गिलास, पंचपात्र, आचमनी, गोमुखीमाला, यज्ञोपवीत,, खड़ाउ, कोई एक धर्मग्रन्थ, एक आसन और यथोचित दक्षिणा । इसका एक सेट बनाकर आचार्य का वरण करना चाहिए।